BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना
समाचार

मई 2016
वर्ष 1 अंक 5

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से....2

मंथन: सामाजिक उद्यमिता बनाम सामाजिक सहभागिता.....३

सामाजिक सहभागिता में भारतीय जैन संघटना.....4

बीजेएस गतिविधियाँ.....5

प्रतिभाएँ- जो हमारी प्रेरणास्त्रोत हैं.....6

अल्पसंख्यक सूचनाएँ, जानकारी एवं समाचार.....7

BJS राष्ट्रीय अधिवेशन 2016 @ Chennai 5-6 नवम्बर 2016

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

प्रिय आत्मजन,

इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप अप्रैल माह के प्रारम्भ से अनुभव कर रहें हैं जो हम सभी के लिए यातनामयी तो है किन्तु वर्षा ऋतु के आगमन का पथ भी यहीं से सुनश्चित होता है. आईये ! हम सब परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करें कि इस वर्ष पर्याप्त वर्षा हो ताकि सूखे ओर अकाल से जूझ रहा देश इस स्थिति से निज़ात पा सके.

अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में i-BuD 3 आयोजित हुआ जो आशास्पदरूप से अत्यंत ही सफल रहा. आयोजन की समाप्ति पर प्रतिभागियों द्वारा दिए गए प्रतिभावों में उन्होंने इसे जीवन परिवर्तन हेतु मार्गदर्शनों एवं प्रोत्साहनों का अमूल्य तोहफा बतलाया. युवा वर्ग एवं युवा उद्यमियों हेतु व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान के अंतर्गत i-BuD 3 नामक यह कार्यक्रम हमारी विभिन्न परियोजनाओं के गुलदस्ते का एक पुष्प है. विशिष्ट कार्यशैली के तहत् भारतीय जैन संघटना स्थापना काल से ही सदैव मानवीय सेवाकीय कार्यों में प्रवृत्त रहा है. आपदाग्रस्त बच्चों के शैक्षणिक पुनर्वसन से लेकर आपदा प्रबंधन, युवक/युवती सक्षमीकरण आदि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय जैन संघटना उत्तरदायी सामाजिक सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है. सामाजिक उद्यमिता एवं सामाजिक रचनात्मकता में भारतीय जैन संघटना की सहभागिता की विवेचना पर ही यह अंक आधारित है.

महान दार्शनिक अरस्तु ने कहा कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है व समाज की परिधि के बाहर उसका वसन संभव ही नहीं है. सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के क्रमिक विकास में मानव की सहभागिता सदैव से ही रही है. 'परिवार' नाम की संस्था समाज की मूलभूत इकाई है या यह भी कहा जा सकता है कि समाज का सृजन मात्र परिवार से ही संभव है, किन्तु आदर्श समाज का सृजन अन्य संस्थाओं, व्यवस्थाओं, नीति नियमों, रिवाजों एवं संस्कारों के योग्य अंशदान एवं सहभागिता पर निर्भर करता है. अतः हमारा भी यह दायित्व बनता है कि समाज के क्रमिक विकास में हम हमारी सहभागिता सुनिश्चित करते रहें.

मित्रों! सामाजिक कार्यों या सेवाओं की गणना कुछ समय पूर्व तक दान-धर्म एवं परोपकार के क्षेत्र में होती थी किन्तु गत कुछ दशकों में सामाजिक अवधारणाओं में आये भारी परिवर्तनों के कारण अब सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र ने उद्यम का स्वरुप ग्रहण ही नहीं किया अपितु समाज विकास का पर्याय भी बन रहा है. मैंने कहीं पढ़ा था कि सामाजिकता धैर्य की परीक्षा के साथ आशाओं का विज्ञान है. यह स्मरण में रहे कि वर्षा की बूंदें भले ही छोटी होती हैं, लेकिन उनका लगातार बरसना ही बड़ी नदियों में जल प्रवाह का निमित्त बनता हैं. आवश्यकता है कि हम सब अपनी -अपनी क्षमताओं के अनुरूप समाज विकास से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में जुड़ें.

इस अंक में 'पोस्टकार्ड व्यक्ति' श्री प्रदीप लोखंडे, पुणे से भी आपका परिचय करवा रहे हैं जो ग्रामीणों के विकास एवं उद्धार हेतु समर्पित ऊर्जावान एवं अद्वितीय सामाजिक उद्यमी है.

मुझे विश्वास है कि सामाजिक सहभागिता पर इस अंक में प्रकाशित लेख व विचारों को हम सभी आत्मसात करते हुए 'Jain's for India' की अवधारणा को सिद्ध करने हेतु प्रयासरत रहेंगे.

गत अंक की सजावट एवं पठनीय सामग्री हेतु सराहना के अनेक पत्र पाठकों से प्राप्त हुए हैं. आपका धन्यवाद। आशा है आपके विचारों एवं सुझावों से हमें अवगत कराते रहेंगे.
संपादक

प्रफुल्ल पारख

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

सामाजिक सहभागिता में भारतीय जैन संघटना

भारतीय जैन संघटना का ध्येय समाज के समग्र विकास से राष्ट्र निर्माण करना है. हमारा स्पष्ट दृष्टिकोण ही हमारे संकल्पों एवं उत्तरदायित्वों का प्रतिबिंब हैं. सामाजिक विसंगतियां एवं समस्यायें, जिनसे समाज में विघटन की प्रक्रिया जन्म लेती है, उन पर लक्ष्य करना हमारी विशिष्ट कार्यशैली का हिस्सा है, साथ ही प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों का सामना करने में हमारा रचनात्मक अभिगम, हमारी विशेषता है.

नेपाल भूकंप राहत कार्य

बिहार बाढ़ राहत कार्य

महाराष्ट्र सूखा राहत कार्य

जम्मू - कश्मीर भूकंप राहत कार्य

अंडमान त्सुनामी भूकंप राहत कार्य

गुजरात भूकंप राहत कार्य- स्कूलोंका निर्माण

समाज के समग्र विकास की हमारी रणनीति के तहत् हम प्रत्येक मानव का मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं भावात्मक विकास सुनिश्चित करना चाहते हैं जो वैकल्पिक शैक्षिकता का ही स्वरूप है जिसका धरातल मानवीय समानताओं के अभिगम पर आधारित है।

हमारा मुख्य ध्येय राष्ट्र स्तरीय समस्याओं पर कार्यरत होकर राष्ट्र निर्माण में सहभागिता करना है. ध्येय प्राप्ति हेतु, हम निम्न महत्वपूर्ण 3 क्षेत्रों पर कार्यरत हैं :

1) आपदा प्रबंधन

- बड़ी प्राकृतिक दुर्घटनाओं में देश के किसी भी कोने मे पहुंचाना हो, तत्काल राहत पहुंचाना
- आपदाग्रस्त क्षेत्रों में शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य अवसंरचना (Infrastructure) का पुनर्निर्माण

2) शैक्षणिक पहल

- आपदाग्रस्त क्षेत्रों में शैक्षणिक कार्यक्रमों के प्रोत्साहन में शैक्षणिक अवसंरचना एवं सुविधाओं का विकास
- युवा वर्ग के शैक्षणिक, भावात्मक एवं सामाजिक विकास हेतु शैक्षणिक कार्यक्रमों का निर्माण एवं क्रियान्वयन

3) सामाजिक विकास

- समाज के जरूरतमन्द वर्ग को स्वास्थ्य एवं शल्य चिकत्सा सहायता
- वैवाहिक, पारिवारिक, केरियर एवं व्यावसायिक, मार्गदर्शनों आदि के कार्यक्रमों से व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकास हेतु सहभागिता.

समस्याओं एवं नित बदलती पारिवारिक आवश्यकताओं के मद्देनजर सामाजिक यान्त्रिकीय अभिगमों के साथ समाधानों की प्रस्तुति हमारी विशेषता है. उच्च स्तरीय परियोजनाओं के निर्माण एवं देश के किसी भी कोने में आवश्यकतानुरूप त्वरित एवं परिणामलक्षी क्रियान्वयन में भारतीय जैन संघटना ने उदाहरणीय इतिहास रचा है. हम समर्पित कार्यकर्ताओं के ताने-बाने से तैयार किए गए वस्त्र रूपी नेटवर्क का गतिशील विकास एवं दीर्घकालिक परिणामों हेतु प्रयोग करते रहेंगे.

अल्पसंख्यक कार्यशाला

परिचय सम्मलेन

मेट्रीमोनियल गेट - टू - गेदर

युवती सक्ष्मीकरण

व्यावसायिक सक्षमीकरण i-BuD

BJS यूथ विंग

WERC में बच्चों से चर्चारत भूतपूर्व राष्ट्रपति

कश्मीरी बच्चों का शैक्षणिक पुनर्वसन

आत्महत्याग्रस्त किसानों के बच्चो का पुनर्वसन

पुनर्वसन केंद्र, वाघोली का विहंगम दृश्य

मंथन

सामाजिक उद्यमिता बनाम सामाजिक सहभागिता

आधुनिक व्यावसायिक युग में अब उद्यमी नए विचारों के बल पर नव्-क्षितिजों को स्पर्श कर रहे हैं जो तकनीकी-युक्त व्यावसायिक क्रांति के उद्भव का भी कारण है. आज समाज एवं समाज विकास की भी ऐसी ही क्रांतिकारी क्षेत्रों में गणना होनी चाहिए, किन्तु यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे देश में सामाजिक विकास को व्यावसायिक एवं आर्थिक क्षेत्र जैसी प्राथमिकता एवं महत्व देने के मनोविज्ञान का विकास ठीक से हुआ ही नहीं है. सामाजिक क्षेत्र में व्यवसाय के अब असीम अवसर उपलब्ध हैं जिन पर कार्यरत होकर समाज को ही नहीं अपितु स्वयं को भी लाभान्वित किया जा सकता है. किन्तु सामाजिक उद्यमिता को समझने हेतु हमारे पारंपरिक नज़रिये में तथा वार्षिक बैलेंस-शीट में मात्र अधिकतम लाभांश देखने की हमारी मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना ही होगा. सामाजिक लाभों की फलद्रुपता व समाज पर उसका प्रभाव ही सामाजिक उद्यमिता का प्रथम मापदंड होना चाहिए. सीधे-सीधे अर्थों में, समाज कार्यों व विकास को अब व्यवसाय का स्वरूप प्रदान करना ही समय की मांग है. इस विषय पर समाज व देश में जागृति लाकर ही समाज को लाभान्वित कर उसके सुनहरे भविष्य को सुनिश्चित किया जा सकता है. इन प्रयासों से आगामी कुछ वर्षों में सामाजिक उद्यमिता की गणना देश में प्रस्थापित व्यवसायों की श्रेणी में होने की प्रबल संभावना है.

शब्दावली में "सामाजिक उद्यमिता" का अर्थ समाजजन की समस्याओं या नित बदलती हुई आवश्यकताओं को समझते हुए उनका नियोजित व्यावसायिक पद्धति से निराकरण या पूर्ति करना है. सामाजिक उद्यमिता संस्थागत या व्यक्तिगत लाभ के साथ-साथ समाज में सकारात्मकरूप से लाभकारी परिवर्तनों पर कार्यरत होती है. सामाजिक उद्यमिता में उन सभी पहलुओं का उतना ही महत्व है जितना कि व्यावसायिक उद्यमिता में होता है. मात्र प्राथमिकताओं में स्वाभाविक तौर पर फर्क होता है.

सामाजिक उद्यमिता वास्तव में क्या है? कुछ उदाहरणों से इसे समझा जा सकता है. श्री वर्गिस कुरियन भारत में श्वेत क्रांति के प्रणेता के रूप में प्रख्यात हैं. उनके निर्देशन में अंतराल ग्राम्य क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादन में सहकारिता के आधार पर ही सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन में हम विश्व में दूसरे स्थान पर पहुँचने में सफल रहे. इसी तरह एक अन्य उदाहरण मोंटेसरी स्कूलों का है. विश्व के प्रत्येक कोने में पाये जाते मोंटेसरी स्कूल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत एवं मान्य शिक्षा का श्रेष्ठ प्रारूप है, जिसे ईटली की प्रसिद्ध शिक्षाविद् मारिया मोंटेसरी ने प्रचलित कर स्वयं को श्रेष्ठ सामाजिक उद्यमी के रूप में प्रस्थापित किया.

आईये! अब सामाजिक सहभागिता पर दृष्टिपात करें। सामाजिक सहभागिता का अर्थ समाज विकास एवं राष्ट्र निर्माण हेतु संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्तर पर कार्यरत रहना. मानव एवं समाज दोनों एक-दूसरे के पूरक होने के साथ विनिमय के पारस्परिक सम्बन्धों से गुथे हुए हैं. सामान्यतौर पर प्रतिदिन के आधार पर मनुष्य को समाज से बहुत कुछ प्राप्त होता है. इस प्राप्ति को ब्याज के साथ लौटने की प्रवृत्ति ही सामाजिक उत्तरदायित्वों का वास्तविक निर्वहन है. इस हेतु मानव का न तो "सामाजिक उद्यमी" होना ही आवश्यक है और न ही उसकी आर्थिक संपन्नता. भौतिक संसाधनों एवं आर्थिक संपन्नता के पीछे दौड़ने की स्पर्धा में जब सामाजिक उत्तरदायित्वों को भुला दिया जाता है तब समाज में असंतुलन की स्थिति से सामाजिक विघटन की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है जो समाज के क्रमिक विकास में घातक सिद्ध होती है.

मात्र प्रकृति प्रदत्त क्षमताओं से सुसज्ज मानव का समाज हित में आंशिक उपयोग भी पर्याप्त है. बड़ी यात्राएं अक्सर छोटे कदमों से प्रारम्भ होती हैं. किसी भूखे को भोजन कराना या जरूरतमन्द की सहायता से भी यह यात्रा प्रारम्भ की जा सकती है.

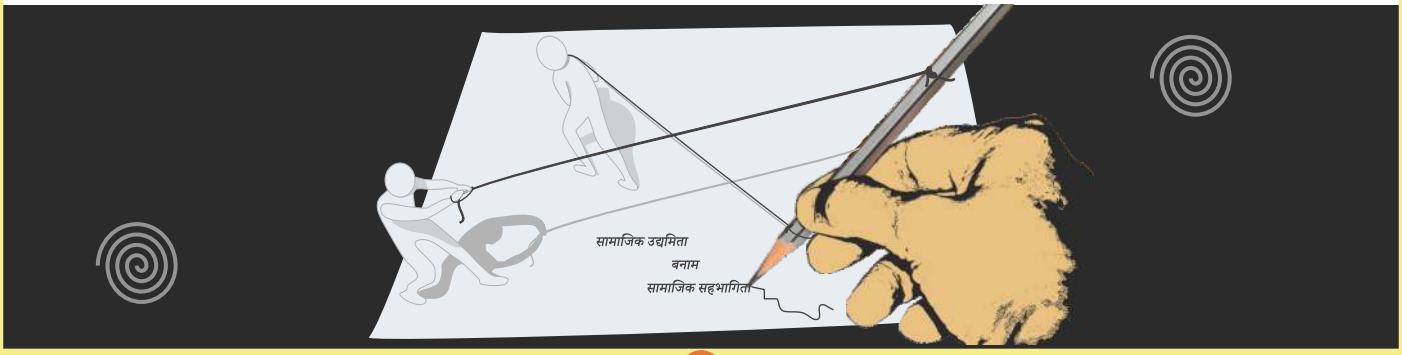

बीजेएस गतिविधियाँ

अमूल्य सामाजिक सेवाओं हेतु बीजेएस संस्थापक श्री शांतीलाल मुथ्था JITO Chapter Pune द्वारा हुए सम्मानित

8 से 10 अप्रैल, 16 को पुणे में जैन समुदाय का अखिल भारतीय स्तर का अति भव्य कार्यक्रम JITO CONNECT, JITO CHAPTER, पुणे द्वारा आयोजित किया गया. हम सभी के प्रिय, दूरदृष्टा एवं सामाजिक नेतृत्वकार श्री मुथ्था को इस कार्यक्रम में उनके द्वारा समाज को प्रदत्त अद्वितीय सेवाओं हेतु "JITO PRIDE OF PUNE AWARD FOR SOCIAL SERVICE TO COMMUNITY" पुरस्कार फिल्म अभिनेता श्री अनुपम खेर के करकमलों से प्रदान किया गया.

BJS व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान के अंतर्गत iBuD-3 का सफल आयोजन सम्पन्न

2 से 7 अप्रैल को आयोजित हुए iBuD3 में 54 युवाओं ने प्रतिभागिता की. इस व्यावसायिक प्रवास कार्यक्रम का शुभारम्भ अहमदाबाद से व समापन हैदराबाद में हुआ.

प्रतिभागियों को नए अनुभव प्राप्त करने के असीम अवसर मिले जिसे उन्होंने जीवन परिवर्तन व व्यावसायिक सोच में क्रांतिकारी नवीनताओं के मार्गदर्शन का स्त्रोत बतलाया.

युवती सक्षमीकरण : बना नया कीर्तिमान

30 अप्रैल को समाप्त भंडारी पब्लिक स्कूल खंडवा (म.प्र.) में श्री कमलेश हूमड़, सदस्य, भा.जै. सं. राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा आयोजित युवती सक्षमीकरण में 352 युवतियों ने भाग लिया. यह एक कार्यशाला में युवतियों की प्रतिभागिता की सर्वाधिक संख्या है. कार्यशाला में भा.जै. सं. के प्रशिक्षक अभिषेक ओसवाल, रत्नाकर महाजन, अर्चना कर्णावत, राजश्री चौधरी, शिल्पा नाहर, अलका ओसवाल एवं अमिता जैन ने प्रशिक्षण दिया. युवतियों एवं अभिभावकों के संयुक्त सत्र में प्रशिक्षण मुख्य प्रशिक्षक संजय सिंघी, सचिव, भा.जै. सं. ने दिया.

BJS राष्ट्रीय महासचिव का उत्तर प्रदेश में व्यापक दौरा

श्री महेश कोठारी ने अप्रैल माह में 5 दिवसीय दौरे में आगरा, कानपुर, बाराबंकी, टिकायत नगर, वाराणसी एवं ईलाहबाद में समाज सभाओं को संबोधित किया व दस्तक दे रही विभिन्न समस्याओं पर समाजजन् को आगाह किया. आपने कहा कि उच्च शिक्षित बच्चों के वैवाहिक रिश्ते तय करने की प्रचलित पारंपरिक पद्धति अब बढ़ते तलाकों का कारण बन रही है. श्री कोठारी ने रिश्तें तय करने की नवीन पद्धति से समाजजन् को अवगत कराया. इस दौरे में उत्तर प्रदेश राज्याध्यक्ष श्री मनोज जैन एवं अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी साथ में थे.

प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्त्रोत हैं

इनसे मिलिए:

श्री हस्तिमल बंब, जालना

बी. जे. एस. राज्य प्रभारी, महाराष्ट्र

वर्ष 1946 मे देसाई गाँव, जिल्हा धार (म0प्र0) मे जन्में, मूल निवासी कनेरिया, जिल्हा पाली, राजस्थान व जालना (महाराष्ट्र) निवासी श्री हस्तिमल बंब उत्साही, समर्पित एवं कर्मठ सामाजिक नेतृत्वकार हैं. आपने व्यावसायिक जीवन का शुभारंभ नौकरी से किया व तत्पश्चात जालना शहर में स्टेशनरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया जिसका संचालन अब आपके पुत्र करते हैं.

श्री शांतीलालजी मुथ्था के वर्ष 1990 में जालना दौरे में श्री बंब को उनसे मिलने का अवसर मिला. उनसे प्रभावित होकर बी. जे. एस. से जुड़े व इसी वर्ष जालना शहर के अध्यक्ष नियुक्त हुए. यह आपकी कर्मण्यता का ही फल है कि वर्ष 1994 में जालना जिल्हा अध्यक्ष, वर्ष 2000 में मराठवाडा क्षेत्रीय अध्यक्ष, 2004 में महाराष्ट्र राज्य अध्यक्ष आदि पदों को सुशोभित करने का अवसर प्राप्त हुआ. वर्ष 1993 में लातूर एवं 2000 में गुजरात भूकंप में अमूल्य सेवाएँ प्रदान की. आपने महाराष्ट्र राज्य अध्यक्षीय कार्यकाल के दौरान महाराष्ट्र के 400 से अधिक गावों का दौरा व जनसम्पर्क किया. वर्ष 1996 में आप सर्वश्रेष्ठ जिल्हा अध्यक्ष एवं 2002 में मराठवाड़ा भूषण पुरुस्कारों से श्री शांतिलालजी मुथ्था के करकमलों से नवाज़े गए. 2009 में आपको आंध्रप्रदेश का राज्य प्रभारी नियुक्त किया। आपके अथक एवं अविरत प्रयासों के फलस्वरूप वर्ष 2011 में बी. जे. एस. का शुभारंभ आंध्रप्रदेश में हुआ.

श्री मुथ्था को वह अपना आदर्श एवं प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं व उन्हीं के कदमों पर चलने का प्रयास करते हैं. वर्ष 2011 से व्यवसाय से सम्पूर्ण रूप से निवृत्त होकर आप सामाजिक सेवाओं रत मे रहते हैं. 71 वर्षीय श्री बंब औद्योगिक व्यापारी संगठन, जालना के गत 5 वर्षों से अध्यक्ष हैं व आप 2012 में "व्यापारी मित्र" पुरूस्कार से नवाज़े गए.

अनेक विशिष्टताओं के धनी श्री बंब जनप्रिय सामाजिक नेतृत्वकार हैं. आपकी कार्यशैली व समाज के प्रति निष्ठा तथा समर्पण उदाहरणीय एवं अनुकरणीय है.

हमे इन पर गर्व है:

श्री शांतिलाल बोरा, पुणे

श्री बोरा का जन्म 1948 मे हुआ. आपने बिल्डिंग मेटीरियल सप्लाई का व्यवसाय किया. युवाकाल से ही आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहे. श्री शांतीलालजी मुथ्था सदैव से ही आपके प्रेरणा स्त्रोत व आदर स्थान में रहे. श्री मुथ्था के निर्देशन एवं सहचर्य में मिले सामाजिक कार्यों के अवसरों हेतु आप ईश्वर का आभार मानते हैं.

श्री बोरा भारतीय जैन संघटना शैक्षणिक पुनर्वसन प्रकल्प, वाघोली, पुणे के चेयरमेन हैं व वर्ष 2006 से इस प्रकल्प के माध्यम से मानवीय सेवा के यज्ञ में आहुतियाँ दे रहे हैं. आपकी सोच, दूरदृष्टी एवं मेहनत का ही परिणाम है कि इस प्रकल्प ने एक नया स्वरूप प्राप्त किया है. आपने शिक्षकों व कर्मचारियों की कार्य-मानसिकता में आवश्यक परिवर्तन कर सकारात्मक एवं पोषक वातावरण निर्मित किया है. इस प्रकल्प में संचालित विद्यालय एवं महाविद्यालय में 5000 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं व प्रतिवर्ष 100% परिमाण रहता है.

आप बी.जे. एस. द्वारा पिंपरी, पुणे में संचालित विद्यालय के भी प्रभारी हैं. श्री बोरा अरिहंत प्रतिष्ठान, श्री संघ, वडगांवशेरी के कार्याध्यक्ष, बी. जे. एस. प्रबंध समिति के सदस्य, जैन कान्फ्रेंस दिल्ली के कार्यवाहक समिति सदस्य, महाराष्ट्र पोलिस संघटना के सदस्य व अन्य अनेक संस्थाओं में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं. "प.पू. आनंदऋषिजी महाराज" फिल्म में आनंदऋषिजी महाराज की भूमिका में आपने प्रभावी अभिनय दिया .

68 वर्षीय श्री बोरा सीमा पर खड़े सिपाही की तरह समाज सेवाओं का अनुशासित रूप से निष्पादन करते हैं. सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सदैव सचेत श्री वोरा वाघोली प्रकल्प के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं के चरित्र निर्माण द्वारा देश को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित हैं.

युवा प्रतिभा : **श्री प्रदीप लोखण्डे,**

पुणे, महाराष्ट्र : संस्थापक 'Rural Relations'

(ग्राम्य भारत के स्वरूप को पोस्टकार्ड की सहायता से बदलने की संकल्पना करने वाला अदभूत व्यक्तित्व)

कुछ वर्षों पूर्व के समय को याद करें. मित्रों एवं स्नेहियों से पत्र की प्रतीक्षा व तभी पोस्टमेन का घर पर पत्र दे कर जाना, शब्दों मे उस प्रसन्नता को व्यक्त करना नामुमकिन सा है.

श्री प्रदीप लोखण्डे ने नई तकनीक व आधुनिक जीवन शैली को चुनौती दी है क्योंकि आधुनिक संचार माध्यमों के युग मे 49,000 गावों के 58 लाख से अधिक व्यक्तियों को पोस्टकार्ड से संपर्क कर एक कीर्तिमान स्थापित किया. श्री लोखण्डे ख्याति प्राप्त सामाजिक उद्यमी हैं जो 'Rural Relations' के संस्थापक हैं व ग्राम्य विकास हेतु कार्यरत है. यह संस्था वर्ष 2019 तक अंकीकृत (Digitalised) ग्रामीण समाज की स्थापना हेतु कृतसंकल्पित है. श्री लोखण्डे के नेतृत्व में उनकी टीम ग्रामीण नेतृत्वकार एवं प्रवासी ग्रामीणों से संपर्क कर विकास एवं नेटवर्क विस्तार हेतु कार्यरत है. श्रेष्ठ संवाद एवं संपर्क से सुदूरवर्ती ग्राम्य क्षेत्रों मे विकास की कार्ययोजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन से श्री लोखण्डे ने नवयुगीन सामाजिक उद्यमिता के अभिगम को योग्य तरीकों से परिभाषित किया है.

17 वर्षों से कार्यरत श्री लोखण्डे ने अनुभव किया कि स्पर्धा के युग में ग्रामीण विद्यार्थी पिछड़ जाएँगे अतः 28,000 ग्रामीण विद्यालयों मे कंप्यूटर देने की योजना बनाई व अब तक 3 राज्यों के 3600 विध्यालयों मे कंप्यूटर स्थापित कर चुके हैं. आपने Gyan-Key-Library योजना का शुभारंभ ग्राम्य उत्तरदायित्व के तहत् किया जिसमें 395 Libraries के माध्यम से एक लाख ग्रामीण विद्यार्थी प्रतिदिन लाभान्वित हो रहे हैं.

नव प्रवर्तन हेतु यह आवश्यक नहीं कि हम शिक्षा मे प्रथम स्थान पर रहे. मात्र जूनून, दृढ़-संकल्प एवं कुछ कर गुजरने की चाहत होनी चाहिए.आज श्री प्रदीप लोखण्डे व उनकी टीम ग्राम्य जीवन को सही अर्थों में उन्नत कर रही है.

संवैधानिक अधिकारों के प्रति अल्पसंख्यक जैन समुदाय में सचेतनता आवश्यक

भारतीय संविधान ने देश के नागरिकों को सार्वभौमिक प्रजातंत्रीय गणतंत्र प्रदान किया जिसका अर्थ प्रजा का, प्रजा के लिए एवं प्रजा के द्वारा है, जिसमें देश के शासन में प्रजा की भागीदारी की भावना निहित है. संविधान निर्माताओं ने मात्र राजनीतिक प्रजातंत्र की व्यवस्था नहीं दी अपितु विभिन्न जातियों एवं धर्मावलम्बियों की भौगोलिक स्थितियों के अनुरूप वास्तविक सामाजिक एवं आर्थिक समानुभूति के प्रावधानों के साथ वाणी, अभिव्यक्ति एवं स्वतन्त्रता के अधिकारों से समृद्ध कर, इसे सामजिक गणतंत्र के रूप में भी परिभाषित किया है. भारत विविधताओं का देश है एवं स्वतन्त्रता के समय देश की विभिन्न जातियों, समुदायों एवं धर्मों की आवश्यकतानुरूप सामजिक उत्थान के मद्देनज़र आरक्षण एवं अल्पसंख्यकता जैसे प्रावधानों का मात्र संविधान में उल्लेख ही नहीं किया गया अपितु अधिकारों का स्वरुप भी प्रदान किया.

भारत सरकार ने जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यकता का दर्ज़ा 27 जनवरी, 2014 को प्रदान किया. इससे पूर्व देश के 14 राज्यों ने जैन समुदाय को उनके स्तर पर अल्पसंख्यक दर्ज़ा प्रदान किया हुआ था. अनेक भ्रांतियां व मत-मतान्तरों के कारण अल्पसंख्यक विषय जैन समुदाय में राष्ट्र स्तरीय विवाद का कारण रहा, फलस्वरूप समाज में इस विषय के प्रति अज्ञानता व उदासीनता आज भी विद्यमान है. भारतीय जैन संघटना ने इस स्थिति को मात्र समझा ही नहीं अपितु समस्त जैन समुदाय को विषय, अधिकारों एवं लाभों से परिचित कराने व जैन समुदाय की संस्कृति एवं भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के उद्देश्य से रचनात्मक फलश्रुति हेतु 'अल्पसंख्यक लाभ जन-जागृति अभियान' का शुभारम्भ वर्ष 2014 से ही किया.

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 एवं 30 में अल्पसंख्यक समुदायों को विविध संवैधानिक अधिकार प्रदान किये गए हैं. अनुच्छेद 29 में यह उल्लेखित है कि अल्पसंख्यक समुदायों की लिपि, भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित किया जाएगा. इस विधान का अर्थ क्या है ? यह हमें समझना होगा. इन संवैधानिक अधिकारों का जैन समुदाय के लिए अर्थ एवं महत्व क्या है? इन संवैधानिक अधिकारों का उपयोग जैन समुदाय द्वारा किस तरह किया जाय? क्या जैन समुदाय सचमुच ही इन अधिकारों का लाभ लेने की स्थिति में है? यह यक्ष प्रश्न हमारे समक्ष है. किन्तु यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जैन समुदाय में अल्पसंख्यक विषय एवं अधिकारों की प्राप्ति के लिए आवश्यक मानसिक सुसज्जता का अभाव स्पष्टरूप से दिखता है.

सम्पूर्ण विश्व मे लगभग 6500 भाषाएं अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्र स्तरीय आदि प्रचलन में है. एक अध्ययन के अनुसार लगभग प्रत्येक दशक के अन्तराल में विश्व में कुछ भाषाएँ लुप्त हो जाती हैं जो इन भाषाओं से जुड़ी मानव संस्कृति के पतन का द्योतक है. हमारे संविधान निर्माताओं की दूरदृष्टी ही थी कि देश की सांस्कृतिक धरोहरों को समृद्धता प्रदान कर रही उन विभिन्न जातियों, धर्मों एवं संस्कृतियों के भविष्य में क्षीण होने की संभावना थी, विशेष संरक्षण के प्रावधान संविधान में किये.

एक तरफ जैन समुदाय की दशक दर दशक घटती जनसँख्या व दूसरी तरफ हमारी अपनी ही मूल संस्कृति से बढ़ती दूरीयाँ, जैन समुदाय के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रही हैं. इस विषय पर जैन समाज में मत-भेद हो सकते हैं किन्तु यह भी नग्न सत्य है कि जैन समुदाय स्वयं की भाषा एवं लिपि से कोसों दूर होता जा रहा है, जो अंततः हमारी संस्कृति के पतन का कारण बन सकता है.

हमारी मूल लिपि एवं भाषा या भाषाएँ क्या हैं? हमारी संस्कृतिक धरोहरें कौनसी हैं, जो हमारी विश्वस्तरीय प्रतिष्ठा का कारण रही हैं? क्या इन्हें मात्र हमारी विरासत मान लेना उचित एवं पर्याप्त होगा? या फिर इनके संरक्षण की आवश्यकता है? हमारी लिपि, भाषा एवं संस्कृति हमारे दैनिक जीवन हिस्सा कैसे बने? इस विषय पर जैन समुदाय में राष्ट्र स्तरीय चिंतन की आवश्यकता है.

भारतीय संविधान ने हमें अधिकार देकर यह अवसर प्रदान किया है कि हम हमारी लिपि, भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण से सम्बद्ध योजनाओं का निर्माण कर संवैधानिक प्रावधानों के तहत् भारत सरकार से स्वीकृत करवाएं. अल्पसंख्यक विषय को लेकर जैन समुदाय में व्याप्त उदासीनता तथा अचेतनता को समाप्त करने हेतु गंभीरता से प्रयास होने चाहिए. जैन अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से लिपि एवं भाषा संबंधी योजनाओं का क्रियान्वयन संभव है. जैन समाज के विभिन्न पंथों में संस्कृतिक मुद्दों पर धरातलीय मत मतान्तर हो सकते हैं किन्तु सर्वस्वीकृत अनुकरणीयताओं पर सहमति हेतु जैन समुदाय के बुद्धिजीवियों को आगे आना चाहिए क्योंकि सरकार द्वारा संवैधानिक प्रावधानों के तहत् प्रदान किये जाने वाला संरक्षण पंथ विशेष का नहीं अपितु जैन समुदाय की सर्व-सम्मत संस्कृति का होगा.

गत कुछ दशकों में वैश्विक स्तर पर आ रहे नाट्यात्मक सामाजिक परिवर्तनों से जैन समुदाय भी अछूता नहीं रहा है, फलस्वरूप वह मूल संस्कृति से विमुख होता जा रहा है. उद्भवित हो रही नवीन परिस्थितियां जैन समुदाय के अस्तित्व को चुनौती देती प्रतीत हो रही है. इस विषय पर गंभीरता से चिंतन कर त्वरित कार्ययोजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन से हम हमारी भावी पीढ़ियों के लिए आवश्यक एवं सुरक्षित सामाजिक धरातल सुनिश्चित कर सकेंगे. भारतीय जैन संघटना इस विषय पर गंभीरता व योजनाबद्ध राष्ट्र स्तरीय प्रयासों हेतु कृतसंकल्पित है.

अल्पसंख्यक प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला पुणे में सम्पन्न

भारतीय जैन संघटना संचालित राष्ट्र स्तरीय 'अल्पसंख्यक लाभ जनजागृति' अभियान के प्रभावी व परिणामलक्षी संचालन हेतु 24 अप्रैल को पुणे में प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें विभिन्न राज्यों के 55 महानुभावों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया. मुख्य प्रशिक्षक श्री निरंजन जुवाँ जैन, सुदर्शन जैन एवं रजनीश जैन ने प्रशिक्षण प्रदान किया. राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने प्रशिक्षणार्थियों को अभियान के तहत् समाज में कार्यक्रम प्रस्तुति सबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया.

Book your dates & Plan your travel

5-6 Nov. 2016

BJS National Convention 2016 @ Chennai

- National & International Speakers
- Jain leaders from various countries
- Keynote addresses by subject experts

BJS 2014 National Convention, Balewadi, Pune

RNI No.-MAHBIL/2016/66409

Book-Post

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Level IV, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org Facebook : www.facebook.com/BJSIndiacommunity Tweeter: BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, ४२७, गुलटेकड़ी, पुणे – ४११०३७ से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – ४११००६ से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (०२०) ४१२००६००
Rs. 10/- Life Subscription